हड़प्पा सभ्यता के पतन के उत्तरदायी कारण

डॉ० जिज्ञासा

हड़प्पा सभ्यता का पतन किसी एक कारण से नहीं बल्कि अनेक कारणों से हुआ। अतः किसी एक मत को स्वीकारना उचित नहीं लगता है। जैसे हड़प्पा–सभ्यता का नागर स्वरूप एक प्रक्रिया का परिणाम था, ठीक उसी तरह इस सभ्यता का पतन एवं रूपान्तरण भी एक प्रक्रिया के तहत ही हुआ एवं इसी के उत्तराधिकारी के रूप में सिन्धु घाटी के पूर्वी एवं उत्तरी भाग पर एक नई संस्कृति का उदय भी होने लगा था और लगभग कुछ सौ वर्षों में यह राजनीतिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र सिन्धु घाटी से गंगा घाटी में स्थापित हो गया। वहीं दूसरी तरफ गंगा घाटी में नगरीकरण की पृष्ठभूमि भी तैयार होने लगी थी। हड़प्पा सभ्यता के नगरों के पतन के उत्तरदायी कारक तत्त्व धीरे–धीरे विभिन्न क्षेत्रों में क्रियाशील होने लगे थे। सैन्धव एवं घग्घर–हाकरा घाटी के केन्द्रीय भू–भाग में जो विस्तृत फैला हुआ व्यापारिक जाल और राजनैतिक परिदृश्य था, वह अब धीरे–धीरे परिवर्तित होने लगा। साथ ही पर्यावरण एवं कृषिगत आधार में भी परिवर्तन दिखाई देता है। प्राचीन सरस्वती नदी की धारा जो सामान्य रूप से बहती थी, वह भूगर्भीय हलचल एवं बालू–मिट्टी के जमाव के कारण अपना मार्ग बदल दिया। वह बदला हुआ मार्ग दो तरफ जुड़ा। एक तो पश्चिम में सतलज–सिन्धु के प्रवाह तंत्र में, तो दूसरा पूर्व में गंगाघाटी के मैदान में यमुना में मिल गया। अधिकाधिक पानी होने के कारण सिन्धु की धारा भी अनियन्त्रित होकर और पूर्व की तरफ बहने लगी जिसकी वजह से कई कस्बे कटकर रेल में दब गये होंगे। मोहनजोदड़ों को बाढ़ से बचाने के लिए मिट्टी की कच्ची ईंट की मोटी दीवार बनाई गयी तथा नगर को ऊँचा भी किया गया। लेकिन छोटे गाँव एवं कस्बे नष्ट ही हो गये होंगे। बाढ़ के आने व नदी की धारा निरन्तर बदलते रहने के कारण कृषिगत ढाँचा के साथ ही सैन्धव नगरों की आर्थिक व्यवस्था भी चरमराने लगी थी। यद्यपि हड़प्पा का अस्तित्व बना रहा। परन्तु आर्थिक आधारभूत ढाँचा, दूरस्थ क्षेत्रों में होने वाले व्यापार आदि सभी ध्वस्त होने लगा। इसी के साथ 1900 ई०पू० में विश्व परिदृश्य पर लगभग 100 वर्षों का सूखे का दौर भी चला, दक्षिण भारत को छोड़कर पूरा उत्तरी भारत इससे प्रभावित हुआ।